

इस बार की बात ...

अच्छा स्कूल !

हर एक वयस्क
या बड़ा ही शिक्षक था
बच्चे व अन्य
लोगों के अनुभवों से सीखते थे।

वे करके सीखते थे
इस तरह ज्ञान, मेहनत व जीवन
एक दूसरे से
अलग-अलग नहीं थे।

वहाँ कोई
ज्ञान का वृक्ष अलग से नहीं था
बल्कि ज़िन्दगी के वृक्ष
की शाखाओं पर ही
ज्ञान खिलता था।



नज़िह

दोस्तों! मैंने देखा है कि आज के स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वे
अधिकांशतः सुनकर ही पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर
पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने
कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं।

उन्होंने देखा है कि आज के स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वे
अधिकांशतः सुनकर ही पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर
पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने
कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं।

मैंने देखा है कि आज के स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वे
अधिकांशतः सुनकर ही पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर
पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने
कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं।

देखो! मैंने देखा है कि आज के स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वे
अधिकांशतः सुनकर ही पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर
पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने
कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं।

अब मैंने देखा है कि आज के स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वे
अधिकांशतः सुनकर ही पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर
पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने
कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं।

मैंने देखा है कि आज के स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वे
अधिकांशतः सुनकर ही पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर
पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने
कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं। वे अपने-अपने कक्षाओं में बैठकर पढ़ते हैं।

● SEE 010

चकमक Eö 246 'Eä+Æö 'Eä

लेख विशेष

SÉEÖ±Eä oEä (Eä=	4
E°E± E°E; ñE	9
nÖE 'Eä; EÖ nuE 1/3	13
ñEÖü Eö±Eä+ÆE E°E	26
+nÆEÖE (E°Eññ - (EñMÉxÉ	42
E°E±Eö SÉEäE, E°E±Eä(EI EÖ	44

कहानियाँ

!EÖE JÉxÉäE±E E°E	10
ÆEÖUEE EÖ+ EÄ	30
ÆE] ðð	38

कविताएँ

SÉ±EäSÉ±Eä	3
°E±E °EñnEä(EÖEÉ PE°ü1/3	22

हर बार की तरह

'E°E (E°EÉ	6
ÉSÉJÉ (E°EÖ	18
VEÖEÉ <°EÖ EäE xEÉ E 1/3	20
+ (E°EÖ) E°EñEñE±EÉ	21
°E°EÉ EÉ	28
'EÉ EÉ (ÉSÉÖ)	34
'E°E (E°EÉ	36

तुम भी बनाओ

ñE°E°EÖ Mäü	8
E; °EÖEÖ	8
1/3 EÖ	12
VEñEÖUE±EÉ	29

<°E +Æö EäE +E°EÉSÉSÉJÉ ñEñE±EÖ E°E1/3 xEäEÉEÉ 1/3 'Eä E°E°EÖ EÉE (EÖ ö] ðð, °E°E°EÉ 'Eä°EÉ EÖ EÖEÉ 'Eä(EgöEÖ 1/3

चकमक

'E°EÖ ÆE±E E°EÉE (EJÉEä
E°E(22, +Æö-1 VEÖE<2006

°E (EñnE	E°EÉE (E°E E°EÉ
E°EñEñE°E±E	°E°EÖE VEñEÖ
+ÆE±E xE°E	°E°E
°E°E°E°E	°E°E JÉJÉÖ
°E°E°E°E	E°E°E
°E (EñnE (E°E E°EÉ	+ÆE±E ±EäEñbä
°E°E°E = i°E1/3	EÖ°E E°E1/3

(EJÉ/SÉñEñE/°E°EÉ; E°E°EäEäE (EÉE

BEÖE°E°E

<7/BSÉ+E°E°EÖ-453,

+°E°E EäE°E°EÖ,

|E°E±E-462 016 (E°E.)

j°EñE - 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

SÉñE Eö nEä

BEÖ EÉE	: 10.00	°EÉ
UöE1/3	: 50.00	°EÉ
ñE°EÖ	: 100.00	°EÉ
nEä°E±E	: 180.00	°EÉ
+E°EÖE	: 1000.00	°EÉ

°E°E 'EäBEÖ JÉSÉJÉ nEä

SÉñE, 'Eä+ÆEñE] ðSÉEÖ °EäBEÖ°E Eä xEÉ E (E°E; E°Eä; ñE±E °EäE1/3 Eä SÉEÖ 'Eä ÆEÖ SÉEÉÉ; 80.00 °EÉ +EÉ°EñE VEñEä

BEÖE°E°E BEÖ °E°EÖ °E°E 1/3 VEäE°EÉ +E°E VEñE°E Eä |EJÉ 'EäEäE°E 1/3 SÉEÖ°EÖ, BEÖE°E°E UöEñE |E°E°E +°E°E°EÖ (EJÉEä 1/3 SÉEÖ°EÖ Eä = qñE°E ÆÉSÉäEä) °E°E°E°E +E°E°E, EäE°E°E°E, EäE°E +E°E°E Eä°E°E°E (E°E°E 'EäEäE°E EäE°E 1/3

चलो चलो...

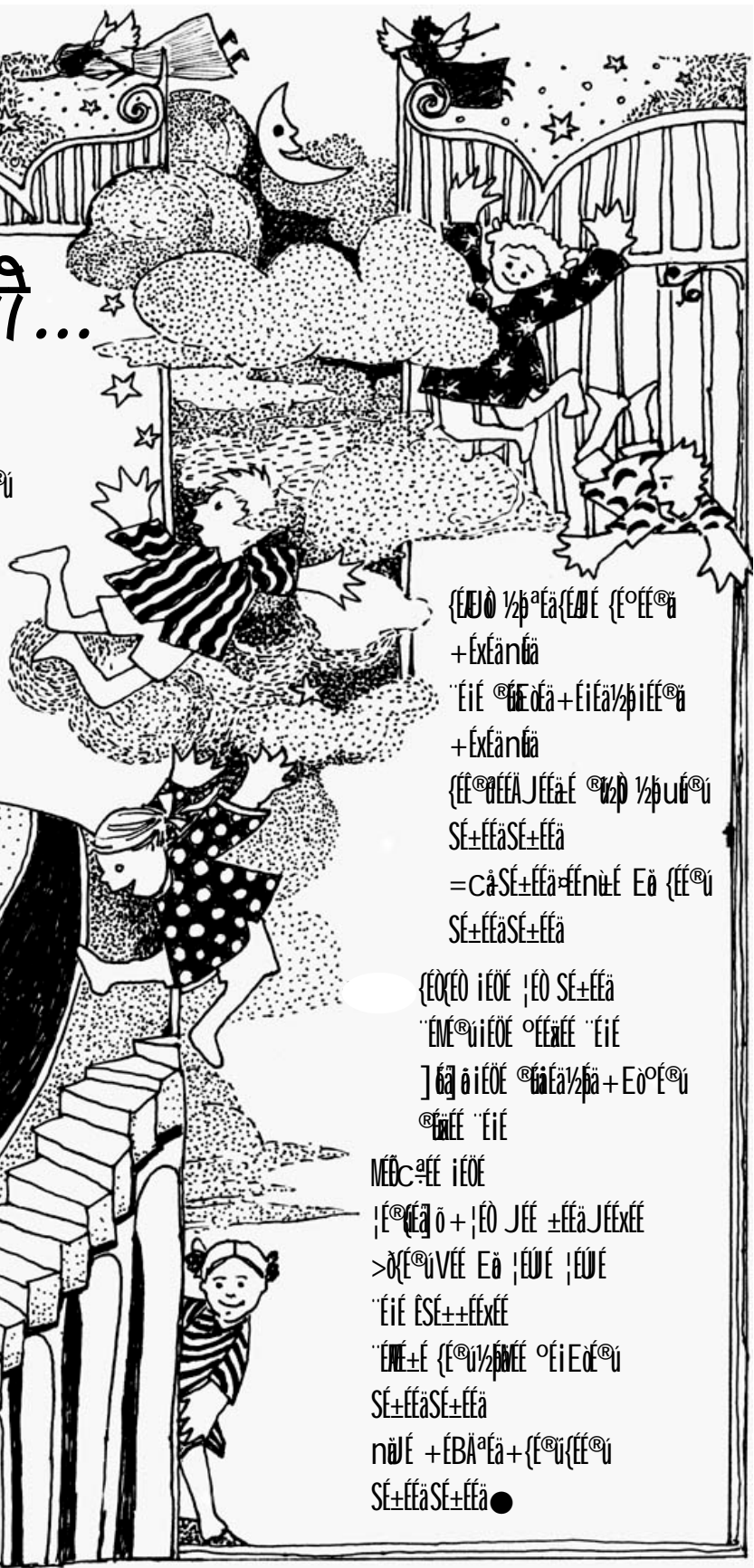
● नवीन सागर

SÉ+ffāSÉ+ffā
 SÉ+ffāSÉ+ffā+ffāEā Eā (ffū
 SÉ+ffāSÉ+ffā
 nāÉ +ÉBā^aEā+{ffū{ffū
 SÉ+ffāSÉ+ffā
 VÉEā;ÉO +ÉB °ÉÉÉ ½pÉÉ^ū
 +Éxānā
 +É VÉEBā^ūEā °ÉÉ^ū
 +Éxānā

{ÉÉO ½p^aEā{ÉBÉ {É^ū
 +Éxānā
 "ÉÉ °ÉÉEā+ÉEā½pÉÉ^ū
 +Éxānā
 {ffūffāJÉEāÉ °½p ½pūffū
 SÉ+ffāSÉ+ffā
 =cāSÉ+ffā+ffāEā Eā (ffū
 SÉ+ffāSÉ+ffā

{É{ÉO iÉOÉ ;ÉO SÉ+ffā
 "ÉÉ^ūiÉOÉ °ÉÉÉÉ "ÉÉ
] Éā iÉOÉ °ÉEā½pā+Eā^ū
 °ÉÉÉ "ÉÉ

NÉC^ūÉÉ iÉOÉ
 !É^ūEā ō+;ÉO JÉÉ +ffāJÉÉÉÉ
 >½pÉÉVÉÉ Eā ;ÉUÉ ;ÉUÉ
 "ÉÉ ÉSÉ++ÉÉÉÉ
 "ÉÉ+É {ffū½pÉÉÉ °ÉEā^ū
 SÉ+ffāSÉ+ffā
 nāÉ +ÉBā^aEā+{ffū{ffū
 SÉ+ffāSÉ+ffā ●



चित्र- विलव